९. नहीं कुछ इससे बढ़कर

– सुमित्रानंदन पंत

परिचय

जन्म : १९००, कौसानी, अल्मोड़ा, (उत्तराखंड)

मृत्यु : १९७७

परिचय : 'पंत' जी को प्रकृति से बहुत लगाव था । प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चितेरे तथा कोमल भावनाओं के कवि के रूप में आपकी पहचान है । आप बचपन से सुंदर रचनाएँ किया करते थे । आपको 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया ।

प्रमुख कृतियाँ : 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'मानसी', 'वाणी', 'सत्यकाम' आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने माँ, कृषक, कलाकार, कवि, बलिदानी पुरुष एवं लोक के महत्त्व को स्थापित किया है । आपका मानना है कि उपरोक्त सभी व्यक्ति, समाज, देश के हित में सदैव तत्पर रहते हैं । अतः इनकी पूजा से बढ़कर दूसरी कोई पूजा नहीं है ।

कल्पना पल्लवन

'मनःशांति के लिए चिंतन-मनन आवश्यक है' इसपर अपने विचार लिखो ।

प्रसव वेदना सह जब जननी
हृदय स्वप्न निज मूर्त बनाकर
स्तन्यदान दे उसे पालती,
पग-पग नव शिशु पर न्योछावर
नहीं प्रार्थना इससे सुंदर !

शीत-ताप में जूझ प्रकृति से
बहा स्वेद, भू-रज कर उर्वर,
शस्य श्यामला बना धरा को
जब भंडार कृषक देते भर
नहीं प्रार्थना इससे शुभकर !

कलाकार-कवि वर्ण-वर्ण को
भाव तूलि से रच सम्मोहन
जब अरूप को नया रूप दे
भरते कृति में जीवन स्पंदन
नहीं प्रार्थना इससे प्रियतर !

सत्य-निष्ठ, जन-भू प्रेमी जब
मानव जीवन के मंगल हित
कर देते उत्सर्ग प्राण निज
भू-रज को कर शोणित रंजित
नहीं प्रार्थना इससे बढ़कर !

चख-चख जीवन मधुरस प्रतिक्षण
विपुल मनोवैभव कर संचित,
जन मधुकर अनुभूति द्रवित जब
करते भव मधु छत्र विनिर्मित
नहीं प्रार्थना इससे शुचितर !

— o —

शब्द वाटिका

जननी = माँ
स्वेद = पसीना
भू-रज = मिट्‌टी
उर्वर = उपजाऊ
शस्य = नई कोमल घास
श्यामला = साँवली, हरी-भरी
कृषक = किसान
तूलि = कूँची, तूलिका
सम्मोहन = मोहित करना
स्पंदन = कंपन
उत्सर्ग = बलिदान
शोणित रंजित = रक्त से भीगा हुआ
विनिर्मित = बनाया हुआ
शुचितर = अधिक पवित्र

मुहावरा

न्योछावर करना = वारी जाना, समर्पित करना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

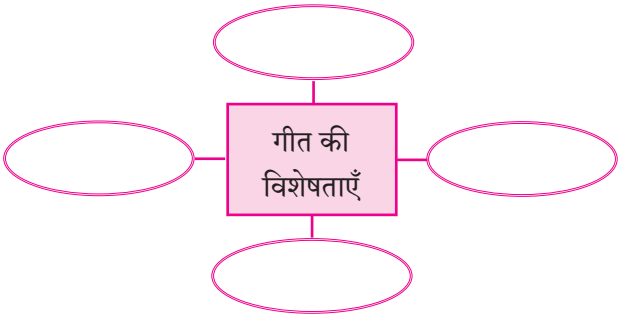

(२) कृति करो :

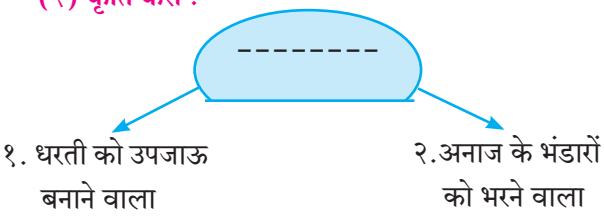

(३) अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(४) कविता में उल्लिखित मानव के विभिन्न रूप लिखो:

१. -----------
२. -----------
३. -----------
४. -----------

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के लिंग तथा वचन बदलकर वाक्यों में प्रयोग करो :

लिंग - कवि, माता, भाई, लेखक

वचन - दुकान, प्रार्थना, अनुभूति, कपड़ा, नेता

उपयोजित लेखन

'सड़क दुर्घटनाएँ : कारण एवं उपाय' निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'राष्ट्रसंत तुकडो जी के सर्वधर्मसमभाव' पर आधारित गीत पढ़ो और इसपर आधारित चार्ट बनाओ ।

J22N4H